36.0 शैक्षिक शोधों में साहित्यिक चोरी एवं दंड के नियमों का अध्ययन

- **नमिता वर्मा**, शोध छात्रा, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
  Email- namitaverma110@gmail.com

सारांश

शिक्षा में नवाचार की अत्यंत आवश्यकता है। शिक्षा में नवाचार लाने के लिए शिक्षाविद, शिक्षा जगत से संबंधित सभी विद्वान आदि निरंतर प्रयासशील रहते हैं| इसके लिए सबसे आवश्यक है- अकादमिक ईमानदारी (Academic Honesty) अथवा अकादमिक सत्य निष्ठा। 'अकादमिक सत्यनिष्ठा से तात्पर्य किसी क्रियाकलाप को प्रस्तावित करने, निष्पादित करने एवं सूचित अथवा रिपोर्ट करने में बौद्धिक ईमानदारी से है, जिससे बौद्धिक संपदा का सृजन हो सके।' परंतु कभी-कभी अकादमिक चोरी अथवा बौद्धिक संपदा का हनन देखने को मिलता है। जिसे साहित्यिक चोरी के अंतर्गत जाना जाता है अर्थात किसी व्यक्ति विशेष के कार्यों, विचारों को बिना उसकी सहमति या बिना उसको श्रेय दिए अपने कार्यों, विचारों के रूप में स्वयं के द्वारा प्रस्तुत करना साधारणत: 'साहित्यिक चोरी' कहलाता है। जिसके लिए यह जरूरी है कि प्रत्येक शोधार्थी शैक्षिक शोधों में होने वाली साहित्यिक चोरी एवं दंड का ज्ञान अवश्य रखें। जिससे वह जाने-अनजाने में होने वाली साहित्यिक चोरी से बच सके। साहित्यिक चोरी के लिए दंड के प्रावधान की व्यवस्था यूजीसी की 'संस्थागत अकादमिक सत्यनिष्ठा नामसूची' (IAIP) के द्वारा की गई है।वर्तमान में शैक्षिक शोधों में साहित्यिक चोरी एक प्रमुख समस्या के रूप में उजागर हुई है।साहित्यिक चोरी की रोकथाम के लिए वर्तमान में यूजीसी की गाइडलाइन 'उच्चतर शिक्षा संस्थानों में अकादमिक सत्यनिष्ठा एवं साहित्यिक चोरी की रोकथाम को प्रोत्साहन' - विनियम 2018 भी निरंतर प्रयत्न कर रही है कि शोधार्थियों को साहित्यिक चोरी एवं इससे होने वाले दंड के विषय में पर्याप्त जानकारी हो। जिससे वह साहित्यिक चोरी के विषय में सचेत हो सके और शिक्षा क्षेत्र में अपना मौलिक योगदान दे सके अर्थात वे एक ईमानदार शोधार्थी के रूप में अपने कार्यों को आगे बढ़ा सके एवं शोध में अपनी उपलब्धि को प्रमाणित कर सके। विशेषता शिक्षा के क्षेत्र में साहित्यिक चोरी एवं इससे होने वाले दंड के विषय में पर्याप्त ज्ञान प्रत्येक शोधार्थी को होना नितान्त आवश्यक है।

मुख्य शब्द- *शैक्षिक शोध, नवाचार, अकादमिक ईमानदारी, शोधार्थी, साहित्यिक चोरी, दंड, यूजीसी गाइडलाइन*

प्रस्तावना

शिक्षा के विभिन्न स्तरों में नैतिकता का होना बहुत आवश्यक है। विशेषत: शिक्षा के उच्च स्तर हेतु। जैसे-जैसे कोई छात्र उच्च स्तर की शिक्षा ग्रहण करता है, उसमें बौद्धिक विचारधारा, विचारों की अभिव्यक्ति निरंतर बढ़ती जाती है। शैक्षिक शोधों में प्रत्यक्षत: शोधार्थी तथा शिक्षक प्रत्यक्ष रूप से जुड़े होते हैं। वर्तमान समय में शैक्षिक शोधों में उच्च शिक्षा में शोध हेतु शोधार्थियों को 'अकादमिक सत्यनिष्ठा' अर्थात ईमानदारी पूर्वक कार्य करना अत्यंत आवश्यक है। परंतु वर्तमान परिपेक्ष्य में शोध के गिरते हुए स्तर में नैतिकता का अभाव/ बेईमानी एक प्रमुख कारण है। विशेषकर उच्च शिक्षा में शोधार्थियों के द्वारा अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए निरंतर शिक्षा के क्षेत्र में गिरावट आ रही है। अकादमिक सत्यनिष्ठा सफलता की बुनियाद है। परंतु अकादमिक सत्यनिष्ठा में एक सबसे प्रमुख बाधा 'साहित्यिक चोरी' है। 'साहित्यिक चोरी का अर्थ बौद्धिक संपदा की चोरी या बौद्धिक धोखाधड़ी से है।अर्थात मूल लेखक या कलाकार को श्रेय दिए बिना लेखन या कलाकृति के कुछ हिस्से का भी उपयोग करते हैं, तो वह 'साहित्यिक चोरी' कहलाता है। साहित्यिक चोरी को अंग्रेजी भाषा में Plagiarism कहते हैं। Plagiarism शब्द लैटिन भाषा के 'Plagiarius' शब्द से बना है, जिसका अर्थ है-" Kidnapper" अर्थात **'अपहरणकर्ता'**। Plagiarius शब्द का सवप्रथम प्रयोग **1**st century *(80A.D.)* में रोमन कवि Martial ने किया था| Martial ने Plagiarius शब्द का प्रयोग- To denote stealing someone else's creative work 'किसी व्यक्ति विशेष के रचनात्मक अथवा सजनात्मक कार्य को चोरी करना' के सन्दर्भ में प्रयोग किया है।

Plagiarism

Latin word- Plagiarius

Kidnapper

प्रसिद्ध नाटकार Ben Jonson ने 1601 में Plagiary शब्द का प्रयोग अंग्रेजी में किया था जो कि Plagiarius शब्द से व्युत्पन्न है। **साहित्यिक चोरी** (Plagiarism) शब्द 1620 के लगभग सम्पर्क में आया| कैंब्रिज ऑनलाइन शब्दकोश- 'किसी अन्य व्यक्ति के विचार या कार्य का उपयोग करने की प्रक्रिया या अभ्यास और यह दिखाना कि यह आपका है। स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय- 'साहित्यिक चोरी को परिभाषित किया जा सकता है- किसी अन्य व्यक्ति के मूल कार्य के लेखक या स्रोतों को उचित और सराहना श्रेय दिए बिना या स्वीकार किए बिना, चाहें ऐसा काम कोड, सूत्रों, विचारों, भाषा, अनुसंधान, रणनीतियों, लेखन से बना हो या अन्य रुप में।

Plagiarism

Academic Cheating

Or

Academic Dishonest

Infringement of Intellectual Property

अर्थात साहित्यिक चोरी से तात्पर्य- किसी भी व्यक्ति - विशेष का स्वयं का कार्य, उसके विचार, उसके शब्दों आदि का प्रयोग बिना उसकी सहमति अथवा बिना उसको आभार/ संदर्भित किए हुए स्वयं द्वारा किए गये कार्य के रूप में प्रस्तुत करना साहित्यिक चोरी है। यह किसी भी रुप में हो सकता है, चाहें वह प्रकाशित अथवा अप्रकाशित रुप में हो| जैसे: मुदित या इलेक्ट्रॉनिक रूप में।

साहित्यिक चोरी की विशेषताएं:-

- किसी व्यक्ति-विशेष के कार्य अथवा विचारों को स्वयं के द्वारा प्रस्तुत करना।
- किसी के कार्य को अपने प्रयोग में लेना, बिना उसको संदर्भित किए बिना।
- किसी व्यक्ति विशेष के शोध कार्य को खुद से प्रकाशित करना।
- किसी भी प्रकार के कापीराइट चित्रों, आडियो, विडियों अथवा सामग्री को अपने नाम से प्रस्तुत करना।
- किसी के कार्य को परिवर्तित करके स्वयं का कार्य बताना।
- किसी के कार्यों की संक्षिप्त व्याख्या करना, उसके विचारों की नकल करना ,बिना व्यवस्थित रुप से उसको संदर्भित किए।

साहित्यिक चोरी के प्रकार -

1. Global Or Complete Plagiarism
2. Verbatim or Direct Plagiarism
3. Source – based Plagiarism
4. Paraphrasing Plagiarism
5. Mosaic or Patchwork Plagiarism

6. Self-Plagiarism and Accidental Plagiarism

वैश्विक अथवा समग्र साहित्यिक चोरी (Global or Complete Plagiarism) :-

समग्र साहित्यिक चोरी को वैश्विक साहित्यिक चोरी के नाम से भी जानते हैं। यह साहित्यिक चोरी का वह प्रकार है, जिसके अंतर्गत शोधार्थी/शोधकर्ता किसी अन्य व्यक्ति विशेष के शोध कार्य को समग्र रूप से पूरी सामग्री, अंतर्निहित विचार वैसे ही उतार (कापी) देता है और उसको अपने नाम से स्वयं का कार्य बताता है, बिना उस व्यक्ति विशेष को संदर्भित किए बिना ही उसके कार्य को स्वयं के कार्य के रूप में प्रस्तुत करता है।

उदाहरण:किसी शोधकर्ता के शोध पत्र को समग्र रूप से उतार कर उसको अपने शोधपत्र के रूप में प्रस्तुत करना|

1. **प्रतिशब्द अथवा प्रत्यक्ष साहित्यिक चोरी (Verbatim or Direct Plagiarism):-**

   प्रत्यक्ष साहित्यिक चोरी को प्रतिशब्द साहित्यिक चोरी भी बोलते हैं। यह साहित्यिक चोरी का वह रुप है, जिसमें शोधकर्ता किसी अन्य शोधकर्ता के कार्य को जैसा है, वैसा ही अपने शोध कार्य के रूप में ले लेता है। प्रत्यक्ष साहित्यिक चोरी इसको इसलिए बोलते हैं, क्योंकि इसके अंतर्गत जो शब्द जैसे हैं, उसको वैसे ही उसी रूप में नोट कर लेता है| बिना उसके कार्य को उद्धृत अथवा संदर्भित किए बिना ही स्वयं के कार्य के रूप में प्रदर्शित करता है।

   उदाहरण: किसी शोध पत्र अथवा थीसिस के कुछ भाग को प्रत्यक्ष रूप से जैसा है, वैसे ही उतार लेना और उसमें किसी भी प्रकार का कोई भी संशोधन ना करना।

2. **स्रोत साहित्यिक चोरी (Source based Plagiarism):-**

   स्रोत आधारित साहित्यिक चोरी का वह प्रकार है, जिसके अंतर्गत शोधार्थी अनिर्देशित रूप से स्रोतों को गलत दिशा की ओर मोड़ने का प्रयास करता है। इसमें शोधार्थी अपने शोध सामग्री के लिए पर्याप्त रूप से स्रोत तो उपलब्ध कराता है, परंतु वह प्रत्यक्ष रूप से उस शोध सामग्री से जुड़े नहीं नहीं होते हैं। अर्थात संदर्भों में गलत जानकारी दी जाती है।

   उदाहरण: किसी शोधकर्ता द्वारा अपने शोधपत्र के लिए पर्याप्त संदर्भों को देता है, लेकिन उसमें दिए गए संदर्भ प्राथमिक और द्वितीयक दोनों ही रूप से मिलान नहीं करते हैं अर्थात वह दिशाहीन संदर्भ अथवा स्रोत होते हैं

3. **सांकेतिक शब्दों में साहित्यिक चोरी (Paraphrasing Plagiarism):-**

   सांकेतिक शब्दों में साहित्यिक चोरी का यह वह प्रकार है, जिसके अंतर्गत किसी लेखक अथवा शोधकर्ता के विचारों को अपने शब्दों में बदल कर, परिवर्तित करके अपने स्वयं के विचार के रूप में प्रस्तुत करना। जिसमें उस वास्तविक लेखक को किसी भी प्रकार का उद्रहण, आभार अथवा उसको संदर्भित किये बिना ही स्वयं का कार्य बताना।

   उदाहरण: किसी शोध पत्र अथवा थीसिस में किसी शोधकर्ता के विचारों को लेकर उसको अपनी भाषा में प्रस्तुत करना जिसमें वाक्यों, शब्दों में परिवर्तन करके स्वयं के कार्य के रूप में प्रदर्शित करना।

4. **मोजेक अथवा पैचवर्क साहित्यिक चोरी (Mosaic or Patchwork Plagiarism)**

   रमोजेक साहित्यिक चोरी को पैचवर्क साहित्यिक चोरी के नाम से भी जानते हैं। यह साहित्यिक चोरी का एक अनूठा प्रकार है, जिसके अंतर्गत विभिन्न स्थानों से थोड़ी-थोड़ी शोध सामग्री लेकर उसको एक साथ लाकर एक नए शोध कार्य/शोध सामग्री के रूप में जोड़ देना, इसलिए इसे पैचवर्क बोलते हैं| जबकि वास्तविक लेखक को उद्धरण नहीं किया जाता है।

   उदाहरण: शोधार्थी द्वारा एक शोध पत्र लेखन के लिए अलग-अलग स्थानों से थोड़ी-थोड़ी शोध सामग्री लेकर अथवा थोड़ा-थोड़ा भाग लेकर सबको जोड़ कर एक नयें शोध पत्र के रूप में प्रस्तुत करना।

5. **स्वयं साहित्यिक चोरी (Self-Plagiarism) :-**

   'स्वयं' अथवा **'स्व:'** साहित्यिक चोरी का एक प्रकार है| इस प्रकार की साहित्यिक चोरी के अंतर्गत स्वयं के शोधकार्यों को जो

पहले पूर्ण एवं प्रकाशित हो चुके हैं, उनमें से कुछ भाग को- सारणी, परिणाम, विचार, वाक्यों अथवा भाषा को अपने नवीन शोध कार्य के रूप में प्रस्तुत करना, 'स्वयं' साहित्यिक चोरी के अंतर्गत आता है| साथ ही साथ इसके अंतर्गत अपने पुराने शोध कार्य को शोधार्थी द्वारा संदर्भित नहीं किया जाता है।

उदाहरण: यदि किसी शोधार्थी ने एक शोध पत्र लिखा और उसको प्रकाशित कराया और तदुपरांत एक नया शोध पत्र लेखन में पुराने आंकड़ों का ही प्रयोग करके एक नया परिणाम/नये कार्य के रूप में दिखाना।

6. **आकस्मिक साहित्यिक चोरी (Accidental Plagiarism):-**

आकस्मिक साहित्यिक चोरी का वह रुप है, जिसके अंतर्गत शोधार्थी जाने-अनजाने में इस प्रकार की साहित्यिक चोरी को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से करता है। जिसमें शोधार्थी द्वारा शोध सामग्री के स्रोत की अनदेखी करना अथवा वाक्यशैली को जैसा है, वैसा ही ले लेना। उसमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन ना करना तथा शोध सामग्री में स्रोतों व उद्धरण को देना भूल जाना आदि। इसके लिए यह आवश्यक है कि प्रूफरीड (proofread) शोधार्थी द्वारा अवश्य किया जाए और जहां आवश्यक हो उद्धरण अवश्य दिया जाए, जिससे आकस्मिक साहित्यिक चोरी से बचा जा सकें।

साहित्यिक चोरी के कारण:-

साहित्यिक चोरी के कई कई कारण होते हैं| यह कारण चाहे शोधार्थी से संबंधित हो, शिक्षकों से संबंधित हो अथवा शैक्षिक संस्थानों से संबंधित हो। यह सभी एक समस्या के रूप में उत्पन्न होता है । उदाहरण- यदि साहित्यिक चोरी शोधार्थी के परिपेक्ष्य से की जाती है, तो शोधार्थी अपने अकादमिक लक्ष्य को कभी प्राप्त नहीं कर सकते तथा यह अकादमिक में अनुचित आचरण को दर्शाता है। इसी प्रकार यदि साहित्यिक चोरी एक शिक्षक के द्वारा की जाती है तो यह उनके सम्मान, उनके ऊपर विश्वास को शून्य करती है। इसी के साथ यदि किसी किसी शैक्षिक संस्था के द्वारा अपने हित के लिए साहित्यिक चोरी में संलग्न होते हैं तो वह शैक्षिक संस्थान अपने मूल्यों, अपनी गुणवत्ता को नगण्य के रूप में प्रदर्शित करते हैं। अतः साहित्यिक चोरी के विभिन्न कारण होते हैं, जो इस प्रकार हैं-

1) **साहित्यिक चोरी के विषय में अनभिज्ञता:-** छात्र, शिक्षक और अन्य व्यक्ति विशेष जो किसी न किसी रूप में अकादमिक जगत से जुड़ा हुआ है। उन सभी को साहित्यिक चोरी से भली-भांति परिचित होना चाहिए। परंतु कई बार ऐसा देखने को मिलता है कि साहित्यिक चोरी शब्द से वह अनभिज्ञ होते हैं और यदि जानकारी भी हो तो वह नजरअंदाज कर देते हैं
2) **विषय ज्ञान में कमी** - साहित्यिक चोरी का एक प्रमुख कारण विषय ज्ञान में कमी का होना है। जिससे शोधार्थी को यह जानकारी नहीं होती की समस्या कहां से उत्पन्न हुई? इसका समाधान क्या होगा? उसको क्या करना चाहिए? आदि ऐसे भ्रम उसके मस्तिष्क में चलते रहते हैं, जो साहित्यिक चोरी का कारण बनता है।
3) **खराब लेखन शैली-** गुणवत्तापूर्ण कार्य के लिए शोधार्थी को सर्वप्रथम अपने विचारों, क्रियाओं, अनुभवों को एक अच्छी लेखन शैली में पिरोना होता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि वह वास्तविक रूप से लिखा जाए| परंतु वर्तमान में देखने को मिलता है कि शोधार्थियों की खराब लेखन शैली से अर्थ का वह रूप नहीं निकल पाता जो वह कहना चाहते है।
4) **भाषा**- अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए भाषा में पकड़ अत्यंत आवश्यक है। परंतु यह देखा जाता है कि किसी की मातृभाषा कुछ और है और उसका अकादमिक कार्य किसी अन्य भाषा में है, तो ऐसी समस्या प्रायः देखने को मिलती है, जो जाने-अनजाने साहित्यिक चोरी का रूप ले लेती है।
5) **अकादमिक ईमानदारी की कमी-** अकादमिक बेईमानी को रोकने हेतु अकादमिक ईमानदारी की अत्यंत आवश्यकता है। परंतु वर्तमान परिपेक्ष्य में तीव्र प्रतिस्पर्धा,व्यक्तिगत स्वार्थ आदि ऐसे प्रमुख कारक साहित्यिक चोरी का कारण बनते हैं।
6) **धैर्य की कमी-** किसी भी कार्य में सफलता धैर्य का होना है। परंतु अकादमिक क्षेत्र में यह देखने को मिलता है कि धैर्य की कमी के फलस्वरुप उच्च रैंकिंग प्राप्त करने की लालसा, गुणवत्ता के स्थान पर मात्र पर जोर आदि के कारण शोधार्थी साहित्यिक चोरी को बढ़ावा देते हैं।

7) **प्रशिक्षण और शोध कौशलों की कमी-** शोध हमेशा कुछ नया अथवा नवीनता को दर्शाता है। जो विभिन्न तकनीकों एवं विधियों से निकल कर आता है। परंतु प्रशिक्षण एवं शोध कौशलों की कमी से अन्य व्यक्तियों के कार्य की नकल कर लेना साहित्यिक चोरी का कारण बनता है।

8) **सोचने, किताबों से जुड़ने की कमी-** एक अच्छे शोधार्थी को हमेशा अच्छे विचारों के लिए सोचने की क्षमता को विकसित करना चाहिए। साथ-साथ किताबों को नियमित पढ़ने की आदत भी डालनी चाहिए। परंतु आज शोधार्थी इंटरनेट, एआई आदि के द्वारा अपने कार्य को आसान कर रहा है| जिससे कहीं ना कहीं वह साहित्यिक चोरी हेतु भी जिम्मेदार है। अत: यह भी एक प्रमुख कारण है।

9) **उद्धरण शैलियों और उपकरणों के बारे में अनभिज्ञता-** उद्धरण शैलियां जिनके द्वारा वास्तविक लेखक को श्रेय दिया जाता है। उपकरणों के प्रयोग से शोध में वास्तविक परिणाम को दर्शाया जाता है, परंतु अधिकांश शैक्षिक शोधों में यह देखा जाता है कि शोधार्थी उद्धरण शैलियों और उपकरणों के बारे में अनभिज्ञता रखते हैं।

10) **आंतरिक एवं बाह्य कारक-** आंतरिक और बाह्य कारकों में मुख्यत: आंतरिक कारक- जैसे: समय प्रबंधन, मनोवैज्ञानिक भेदभाव, अंतिम समय में कार्य, साथ ही बाह्य कारकों में प्रतिस्पर्धा, अच्छे ग्रेड लाने की लालसा, मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण में कमी का अभाव आदि कारक शैक्षिक शोधों में साहित्यिक चोरी के रूप में प्रदर्शित होते हैं।

अतः स्पष्ट है कि शैक्षिक शोधों में साहित्यिक चोरी के यह प्रमुख कारण हैं, जो वहां जाने अनजाने में साहित्यिक चोरी का कारण बनते हैं। फिर चाहे वह शोधार्थी के द्वारा हो, शिक्षकों के द्वारा हो अथवा किसी शैक्षिक संस्था के द्वारा किया गया कार्य हो।

साहित्यिक चोरी की विधियां- साहित्यिक चोरी की चार प्रमुख विधियां है, जो जानकारी में अथवा जानकारी के अभाव में प्रयोग होती है, जो इस प्रकार है-

- **कॉपी और पेस्ट-** यह साहित्यिक चोरी की वह विधि है, जिसमें किसी व्यक्ति- विशेष के प्रकाशित कार्य को कॉपी करके उसको अपने कार्य के रूप में पेस्ट कर लेना, बिना उस व्यक्ति विशेष को संदर्भित किए बिना।
- **पर्यायवाची प्रतिस्थापन -** किसी व्यक्ति- विशेष के कार्य को लेकर उसमें कुछ शब्दों को बदलकर उसको स्वयं के द्वारा किए गए कार्य के रूप में दिखाना।
- **मैन्युअल प्रतिस्थापन-** यह साहित्यिक चोरी का वह प्रकार है, जिसमें किसी भी मूलपाठ को बदलकर उसको अपनी समझ के अनुरूप लिखना, बिना उसके वास्तविक लेखक को संदर्भित किए।
- **अनुवादकीय-** किसी के द्वारा किए गए कार्य को किसी अन्य भाषा में बदलकर उसको अपने कार्य के रूप में प्रयोग करना।

साहित्यिक चोरी के स्तर एवं दंड- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (उच्चतर शिक्षा संस्थानों में अकादमिक सत्यनिष्ठा एवं साहित्यिक चोरी की रोकथाम को प्रोत्साहन) विनियम 2018 पारित किया गया। जो साहित्यिक चोरी के स्तर एवं दंड का विधान करते हैं। साहित्यिक चोरी के चार स्तर होते हैं जो इस प्रकार हैं। साहित्यिक चोरी के स्तरों को बढ़ाते हुए क्रम में परिभाषित किया गया जो इस प्रकार हैं-

1) **स्तर शून्य**:- समानता 10% तक। छोटी- मोटी समानताओं के लिए दंड का कोई विधान नहीं है।

2) **स्तर एक:-** समानता का 10 से 40% तक। शोधार्थी को पुश: थीसिस जमा करने के लिए कहना। इसके लिए 6 महीनें का समय दिया जाता है। नोट-6 महीनें से अधिक समय नहीं होना चाहिए।

3) **स्तर दो**:- समानता 40 से 60% तक। इस अवस्था में शोधार्थी को पुन: सुधार करके थीसिस जमा करने के लिए कहना। कम से कम 1 वर्ष के पश्चात साथ ही पर्यवेक्षक को एक वार्षिक वेतन वृद्धि के अधिकार से वंचित कर दिया जाएगा तथा किसी भी नए मास्टर प्रोग्राम पी-एच.डी. , एम. फील. का पर्यवेक्षक 2 वर्ष तक बनने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

4) **स्तर तीन:-** समानता 60% या इससे अधिक| इसके अंतर्गत शोधार्थी का रजिस्ट्रेशन उसके निर्धारित कार्यक्रम में रद्द करना सम्मिलित है। साथ ही पर्यवेक्षक को दो वार्षिक वेतन वृद्धि के अधिकार से वंचित कर दिया जाएगा तथा की किसी भी नए मास्टर प्रोग्राम- पी-एच.डी. , एम. फिल. का पर्यवेक्षक 3 वर्ष तक बनने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

साहित्यिक चोरी के बहिष्कार हेतु समरूपता रोकथाम- साहित्यिक चोरी के अंतर्गत निम्न. की अनदेखी अथवा नियम को साहित्यिक चोरी के अंतर्गत नहीं रखा जाता है,जो इस प्रकार है-

- सभी उद्धृत कार्य का सभी आवश्यक अनुमतियों के साथ प्रस्तुत करना।
- सभी संदर्भों, विषय वस्तु, ग्रंथ सूची, प्रस्तावना एवं आभार।
- सभी सामान शर्ते, कानून (नियम),मानक प्रतीक, मानक समीकरण।

साहित्यिक चोरी का पता लगाने वाले उपकरण- वर्तमान समय में विभिन्न प्रकार की साहित्यिक चोरी का पता लगाने वाले हेतु नि:शुल्क एवं सशुल्क उपकरण उपलब्ध हैं, जो साहित्यिक चोरी का पता लगाते हैं। यह उपकरण /सॉफ्टवेयर पहले से प्रकाशित तथ्यों के साथ तुलना करके पाठ में किसी भी अनजाने दोहराव की पहचान करने में मदद करते हैं। यह उपकरण तथ्यों की समानता व प्रतिशत का पता आसानी से लगा सकते हैं। चाहे वह जानबूझकर किया गया हो अथवा गलती से किया हो। प्रमुख उपकरणों में- Turnitin, Urkund, Plagiarisma, Plagiarism Checker by Small SEO Tools Plagscan, Drill Bit आदि मुख्य सॉफ्टवेयर/ उपकरण है

source:https://media.licdn.com/dms/image/D5612AQEtElgtTtL7tg/article-cover_image-shrink

Prevention of Plagiarism (साहित्यिक चोरी से बचाव):

एक शोधार्थी के लिए यह आवश्यक है कि वह ना सिर्फ साहित्यिक चोरी एवं इसके विभिन्न प्रकारों से अवगत हो, बल्कि साहित्यिक चोरी से बचाव हेतु जागरूक भी रहे। इसके लिए निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर साहित्यिक चोरी से बचाव किया जा सकता है-

- समस्या के समाधान हेतु हमेशा शोधार्थियों को *सृजनात्मक सोच, विचार* का प्रयोग करना चाहिए। जिससे ना सिर्फ उस समस्या का समुचित समाधान मिलेगा, बल्कि इसके साथ ही साथ शोधार्थी को अपने विचारों को, अपनी सोच को विभिन्न दिशाओं में प्रसार का भी अवसर मिलेगा।

- किसी भी शोध कार्य को करने के लिए यह जानना आवश्यक है कि इसका परिमाप क्या होगा? एक शोधार्थी के रूप में इस शोध कार्य का हम किस प्रकार से *अनूठे ढंग* से कर सकते हैं।
- शोधार्थियों के लिए यह आवश्यक है कि किसी भी कार्य को *व्यवस्थित रूप* में करें। कार्य को अंतिम रूप देने से पहले शुरुआत में बनाए गए ड्राफ्ट का बारीकी से निरीक्षण करें। इसके बाद पुनः उस कार्य का बार-बार निरीक्षण करें ,आवश्यक संशोधन के बाद उस कार्य को अंतिम रूप दें।
- किसी भी प्रकार के शोध कार्य को पूर्ण करने से पहले *साहित्यिक चोरी का पता लगाने वाले सॉफ्टवेयर* से अवश्य सुधार कर ले| जो भी समानताएं आयी हैं, यदि वह एक सीमित संख्या से अधिक है, तो फिर से उस कार्य को पढ़ने के साथ-साथ लिखे व उचित रूप से संदर्भित करें।
- शोधार्थियों के लिए वाक्य शैली की कला का ज्ञान आवश्यक है| विविध प्रकार की शब्द योजना, भाषा प्रकारों के प्रयोग की तकनीकों का ज्ञान अवश्य होना चाहिए। जैसे- वाक्य की संरचना में बदलाव लाना, वाक्य की शुरुआत करने के लिए विभिन्न प्रकार की शब्द योजना का प्रयोग, पर्यायवाची का उचित प्रयोग आदि जिससे साहित्यिक चोरी से बचा जा सके।
- भाषा अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। एक शोधार्थी को साहित्यिक चोरी से बचाव के लिए स्पष्ट, संक्षिप्त, सरल एवं वाक्य का पूर्णतयः अर्थ बताने वाली भाषा का प्रयोग करना चाहिए। ऐसी किसी भी भाषा अथवा शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए, जिससे एक से ज्यादा अर्थ निकले व जिससे व्यक्तिनिष्ठता आए।
- शोधार्थियों को हमेशा स्वयं से पहले विविध गतिविधियों अथवा शोध कार्यों के लिए नवीन उपलब्ध सूचनाओं का अन्वेषण करना चाहिए क्योंकि पुरानी सूचनाओं के अधिकांशतः दोहराव की संभावना रहती है अर्थात इससे बचना चाहिए।
- विविध शोध कार्यों में अंतिम में आवश्यक संदर्भ उचित रूप में अवश्य देनी चाहिए। जिसके लिए विभिन्न उद्धरण एवं संदर्भों का समावेश जो शोध कार्यों में सहायक हुए हैं, उनको अवश्य संदर्भित करना चाहिए।
- विविध स्रोतों का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान होता है। जब हम किसी भी प्रकार का लिखित रूप में शोध कार्य कर रहे होते हैं तो स्रोत न केवल हमारे लेखन में हमें सहायता करते हैं, बल्कि यह हमारे विचारों के लिए प्रमाण के रूप में कार्य करते हैं। इसके लिए यह आवश्यक है एक शोधार्थी प्रारंभ से ही विविध स्रोतों को समन्वित रूप से अलग से उन्हें नोट करता जाए, जिससे अंतिम रूप से लिखने में दुविधा ना हो।
- शोधार्थियों में सूचनाओं की सत्यता की पहचान का कौशल अवश्य होना चाहिए| कौन सी सूचना कहां से ले रहे हैं, उसकी प्रमाणिकता का अवश्य ज्ञान होना चाहिए, जिससे उसकी उचित स्रोत की पहचान की जा सके व किसी भी प्रकार की बाधा से बचा जा सके।

उपयुक्त उपायों के माध्यम से एक शोधार्थी साहित्यिक चोरी से जागरूक होकर अपना कार्य कुशलतापूर्वक कर सकता है।

निष्कर्ष-

अत: उपयुक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शैक्षिक शोधों में साहित्यिक चोरी से संबंधित दंड एवं इसके नियमों का ज्ञान होना अति आवश्यक है। जिससे शोध में होने वाली विसंगतियों को दूर किया जा सके और शोध में नवाचार लाया जा सके। अत: उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट है कि वर्तमान तकनीकी युग में प्रत्येक शोधार्थी साहित्यिक चोरी के विषय में भी जाने, बल्कि इसके साथ ही साथ साहित्यिक चोरी के प्रति जागरूक भी हो सके। जिससे अपने शोध को रचनात्मक रूप देकर गतिमान बना सके। अर्थात शिक्षा जगत में अपना योगदान देकर शोध को एक नई दिशा प्रदान करें| अतः स्पष्ट है कि प्रत्येक शोधार्थी के लिए साहित्यिक चोरी एवं इसके प्रकारों के ज्ञान की आवश्यकता है| जिससे साहित्यिक चोरी के प्रति जागरूक हो सकें और अकादमिक ईमानदारी के साथ कार्य कर सके। अत: स्पष्ट है कि शैक्षिक शोधों में साहित्यिक चोरी से संबंधित जानकारी, दंड एवं नियमों का ज्ञान अति आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

एस वुड. (2015). साहित्यिक चोरी क्या है? [वीडियो] यूट्यूब Retrieved on 18-08-2024 from https://youtu.be/brOoE7SufrA?si=6XrVtaINQmja56dR

साहित्यिक चोरी क्या है? [वीडियो] यूट्यूब Retrieved on 18-08-2024 from https://youtu.be/yDpuv2KR6FA?si=aLK6HSoCp3NJpzMg

साहित्यिक चोरी के प्रकार. [वीडियो] यूट्यूब Retrieved on 18-08-2024 from https://youtu.be/j8aA3esMZzA?si=po8My8M0UzKHZJ_N

दीप्तांशु डी. (2022). शोध में साहित्यिक चोरी-संपूर्ण गाइड [ईबुक], SCISPACE, Accessed on 14-08-2024 from https://typeset.io/resources/the-only-plagiarism-guide-you-will-need/

साहित्यिक चोरी. छवि [मीडिया टाइप],Accessed on 10-08-2024 from https://encrypted-tbn0.gstatic.com/images?q=tbn:ANd9GcSXP8S6_52qXLtiLJqmRPU-8yu0qNbFdJdOkQ&usqp=CAU

सात सर्वश्रेष्ठ निःशुल्क साहित्यिक चोरी जांच उपकरण। छवि,[मीडिया टाइप],Accessed on 10-08-2024 from https://media.licdn.com/dms/image/D5612AQEtElgtTtL7tg/article-cover_image-shrink_720_1280/0/1711969107414?e=2147483647&v=beta&t=QcZ1wdqIyGS_lnXhQKFAtS7Y-GV7NrXl6gN4uz6myY8

साहित्यिक चोरी क्या है? परिभाषा एवं उदाहरण. स्क्रिबब्र, Accessed on 14-08-2024 from https://www.scribbr.com/category/plagiarism/

हेल्गोसन जी, एरिक्सन एस. (2015). अनुसंधान में साहित्यिक चोरी. चिकित्सा, स्वास्थ्य देखभाल और दर्शन. 18(1), 91-101, Accessed on 14-08-2024 from https://www.researchgate.net/publication/263743965_Plagiarism_in_research DOI: http://dx.doi.org/10.1007/s11019-014-9583-8